काश! जलनिकासी के स्रोत पक्के होते

यशपाल सिंह

केदारनाथ के आसपास की झीलों से जलनिकासी के कच्चे स्रोतों को अगर पहले पक्का कर दिया जाता तो पानी बहता परंतु बेकाबू न होता। भविष्य में भी इस तरह की त्रासदी रोकने के लिए पहाड़ों पर जलनिकासी के स्रोतों को पक्का बनाने की जरूरत है। क्योंकि वहां रुका हुआ पानी झील में तब्दील होकर लाता है अपने साथ भयानक तबाही। जैसा अभी केदारघाटी और पिछले साल उत्तरकाशी में हुआ।

केदारनाथ तीर्थ स्थल में अनियंत्रित विकास हुआ है, जो कि किसी स्तर से नियोजित नहीं हैं। बेहतर तो यह होता कि यहां पर चरणबद्ध तरीके से नियोजित विकास होता। वहां पर जो भी हुआ, वह भौगोलिक असंतुलन के कारण हुआ है। तकरीबन दस साल से वहां हो रहे परिर्वतनों का असर अब भारी बरसात में देखने को मिला।

टिहरी बांध के विरोधियों को समझना चाहिए कि इसी बांध ने तो काफी पानी अपने अंदर समाहित किया है। अन्यथा बिजनौर, ऋषिकेश, हरिद्वार और नरौरा के आसपास मैदानी इलाकों में और भी भयावह स्थिति पैदा हो सकती थी। पहाड़ों पर अलकनंदा और भागीरथी दोनों नदियां हैं, जो देव प्रयाग में मिलकर गंगा नदी बनती हैं। इनमें से केवल एक अलकनंदा नदी के पानी को रोकने के लिए टिहरी बांध बना है, जबकि केदारनाथ होकर आ रही भागीरथी नदी के पानी को रोकने के लिए बांध की जरूरत है। 1970 में अलकनंदा नदी में अधिक पानी के बहाव के कारण बुरी स्थिति पैदा हो गई थी।

1950 में तकनीकी अधिकारियों ने पांच बांध बनाने की सिफारिश की थी लेकिन पर्यावरण की आड़ लेकर राजनेताओं ने इन बांधों को नहीं बनने दिया। अब आकर उनमें से एक टिहरी बांध बना है। जबकि अलकनंदा, कोटरीबहल, रामगंगा तथा लखवाड़ पर बांध नहीं बने हैं। अगर ये सभी बांध बन गए होते तो काफी हद तक पहाड़ी और मैदानी इलाके सुरक्षित रहते।

■ *जैसा अलीगढ़ में कमल शर्मा को बताया।*

यशपाल सिंह

- 1991 से पूर्व 10 साल तक डायरेक्टर कंस्ट्रक्शन टिहरी बांध
- 1991 से 1993 तक टिहरी बांध सलाहकार बोर्ड के डायरेक्टर
- कर्मचंद थापर के श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर)स्थित कंगन प्रोजेक्ट में आर्बिट्रेटर बोर्ड के डायरेक्टर
- 1500 मेगावाट के नापथा झाखड़ी हाइड्रोप्रोजेक्ट में कान्ट्रैक्टर तथा कारपोरेशन के बीच विवाद निस्तारण बोर्ड के सदस्य